International Journal of Arts & Education Research

आधुनिक भारतीय कला में कला गुरु अवनीन्द्रनाथ टैगोर की भूमिका

श्वता चौधरी,
शोधार्थी
ललित कला विभाग,
मेरठ कालेज, मेरठ,

डॉ० अमतलाल,
शोध निर्देशक
ललित कला विभाग
मेरठ कालेज, मेरठ

सार

कला गुरु अवनीन्द्रनाथ टैगोर एक आदर्श युग परिवर्तक चित्रकार तथा अध्यापक थे। भारतीय पेटिंग में पुनर्जागरण को कायम करने की दिशा में एक प्रमख योगदान अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त करने वाले पहल भारतीय कलाकार अवनीन्द्रनाथ टैगोर थे।1 अवनीन्द्रनाथ टैगोर, नोबल पुरस्कार विजेता रविन्द्रनाथ टैगोर के भतीज थ। इन्होन जापानी शैली, ईरानी शैली, चीनी शैली, राजपुत, मुगल शैली तथा अजन्ता की शैलियों के समन्वय से एक नई कला शैली का निर्माण किया जिसको ''बंगाल शैली'' कहा गया। अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने भारतीय चित्रकला जगत में प्राकृतिक दृश्यों व व्यक्ति चित्रों को समाहित किया जिनमें रंग विधान यूरोपीय व भाव भारतीय है।

अवनीन्द्रनाथ टैगोर के लिये विद्वानों के विचार–

गुरु रविन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार ''जब कभी में सोचता हूँ कि बंगाल में सर्वाधिक सम्मान का अधिकारी कौन है तो मेरे समक्ष सबसे पहला नाम अवनीन्द्रनाथ ठाकुर का आता है उन्होंने देश को आत्महनन के त्रास से बचा लिया और उस अपमान की गहराई से उठाया है और उस सम्मानित स्थिति के लिये वापस प्राप्त कर लिया है जो उस सही था। उन्होंने भारत के लिये अपने योगदान के हिस्से को मान्यता दी है, जो कि मानवता ने खुद को महसस किया है, उसकी कला चतना के पनरुत्थान के माध्यम से भारत पर एक नया यग आया ह और पर भारत ने उनस यह सबक सीखा ह। इस प्रकार उनकी उपलब्धियो के माध्यम से बंगाल के लिये एक गर्वपूर्ण जगह पर स्थान दिया गया है .

पदम माहश्वरी के अनुसार "भारतीय चित्रकला में अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने वही जगह हासिल की जो महात्मा गाधी को भारतीय राजनीति में मिली थी। वह भारतीय कलात्मक पुनर्जागरण के अग्रणी और नता थ। उन्होंने पारम्परिक भारतीय शैली को पश्चिम, चीन और जापान के साथ संश्लेषित किया और चित्रकला की एक नई शैली शुरु की, जिसे बंगाल स्कूल कहा जाता है। इसक अलावा, उन्होंने भारतीय कलाकारो के दृष्टिकोण को बदल दिया और उनक बीच जाच और प्रयोग और मजबूत विचार की एक नई भावना पदा की, जिसक लिये उन्होंने ''भारतीय चित्रकला के पिता'' होन का गौरव प्राप्त किया"

शचीरानी गुर्टू क अनुसार ''अवनी बाब की मौलिक प्ररणा इतनी जागरुक थी कि जब पाश्चात्य और पौर्वात्य कलारुपो में अतर विरोध उठ खड़ा हुआ था और विदेशी दासता भारतीय कला को आत्मा पर पदाघात कर चकी थी तो उन्होंने साहसपर्वक आग बढ़कर उसका नतत्व किया उन्होंने यहा को शिथिल, जजर कला सम्पदा को पतन के गत से ही नही उबारा वरन् उसका सस्करण कर उसम गहराई और अभिनव सौन्दय भी भरा।''

जीवन परिचय व पारिवारिक पृष्ठभूमि

अवनीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म प्रसिद्ध सुसंस्कृत टैगोर परिवार में कोलकता के जोरासंको में 7 अगस्त 1871 को द्वारकानाथ टैगोर के घर में हुआ था। उनके दादा का नाम गिरिन्द्रनाथ टैगोर था वे भी चित्रकार थे। अवनीन्द्रनाथ टैगोर को 'अबन ठाकुर के नाम से भी जाना जाता है। वे नोबल पुरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ टैगोर के भतीजे थे। उनकी माता का नामा सौदामिनी देवी था। गगनेंद्रनाथ और समरेद्रनाथ उनके बड़े भाई और उनके दो बहनें सुनयानी और विनायनी उनसे छोटी थी। गगनेन्द्रनाथ टैगार भी चित्रकार थे। उन्होंनें 1889 में राजा प्रसन्ना कुमार टैगोर के सदन की सुहासिनी देवी से विवाह किया जो भुजगन्द्र भूषण चटर्जी की पुत्री थी। 5 दिसम्बर 1951 को उनका देहांत कलकत्ता में हुआ।

शिक्षा

1880–1889 : वह कोलकाता के संस्कृत कॉलेज में पढ़े, वहां उन्होंने कला की बारीकियों को सीखना शुरु कर दिया। 1889 में अपनी शादी के बाद, उन्होंने संस्कृत कॉलेज छोड़ दिया जहां वह पिछले नौ वर्षों से अध्ययन कर रहे थे, और 1890 में सेट जेवियर्स कॉलेज में दाखिला लिया और सालों तक अंग्रेजी का अध्ययन किया। वहां उन्होंने यूरोपीय कलाकारों गिलार्डी से पेस्टल के उपयोग में महारत हासिल करना सीखा तथा चार्ल्स से तेल चित्रकला पर गहन ज्ञान हासिल किया। 1897 के आसपास, उन्होंने सरकारी पेटिंग्स ऑफ आर्ट के उपाध्यक्ष से यूरोपीय चित्रों में

उपयोग की जाने वाली तकनीकों सहित विभिन्न तकनीकों को सीखा तब वह पानी के रंग की ओर विशेष रूचि विकसित करना शुरू कर दिया। उन्होंनें ई0 बी0 हैवल के साथ मिलकर लघु चित्रकला में अपनी मुगल और राजपूत शैलियों का विकास किया। उन्होंने ओकाकुरु टैकन और शूनसो से ओरिऐटल तकनीकों, गैस्चर और जापानी ब्रश और वास तकनीक के बारे में सीखा।6

अवनीन्द्रनाथ टैगोर का कला परिचय

प्राचीन भारतीय चित्रकला विभिन्न शैलियों से विकसित हुई परन्तु इन सभी शैलियों में सामान रूप से यहां पाया जाता है कि भारतीय चित्रकार अधिकतर अपने चित्रों का विषय धार्मिक तथा ऐतिहासिक चरित्रों से या समकालीन साहित्य से है। वह स्वयं अपनी कल्पना के बल पर साहित्यिक चरित्रों को रंग व रेखाओं के माध्यम से केनवास पर उतारते थे एवं उनकी रचनाय स्वाभाविकता का दपण के सामान है। इस सांस्कृतिक स्थिति का सामना करने के लिये 19वीं शताब्दी की आखिरी तिमाही में भारतीयो का आधुनिक पुनर्जागरण कला शुरू हुई ऐस कई महत्वपण कलाकार थे जिन्होन इस क्षत्र में बहुत योगदान दिया और भारतीय सौदर्याशास्त्र को एक नई दिशा दी। उन सबसे लोकप्रिय भारतीय कलाकारो में से, अवनीन्द्रनाथ टैगोर एक थ। भारतीय पेटिंग में पुनर्जागरण को कायम करने कि दिशा में एक प्रमख योगदान अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त करने वाले पहल भारतीय कलाकार अवनीन्द्रनाथ टैगोर थे।7 भारतोय समाज में भारतीय कला को स्वदेशी मूल्यों पर पर ख्याति प्राप्त करने वाले पहल बड प्रतिवादन थे। अवनीन्द्रनाथ टैगोर को आधनिक भारतीय कला के पिता के रुप में जाना जाता है अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने कभी किसी कलाकार को कोर्ति और अनकती करने का कभी प्रयास नही किया उनक हृदय में स्वदेशी की भावना कट–कट कर भरी थी एवं समकालीन परिस्थितियों में स्वदेशी की भावना अपनी कला के माध्यम से सबक समक्ष रखी। अवनीन्द्रनाथ टैगोर पेटिंग को पारम्परिक भारतीय तकनीक में विश्वास करत थे उन्होंने अनभव किया कि भारतीय कला में पा"चातय परिचय को कला का अत्यधिक प्रभाव था किसी भी चित्रकार के व्यक्तित्त्व का मूल्यांकन उनकी कातियों के माध्यम से संभव होता है एवं कार्तिया के मल में कलाकारो को आत्मा छिपी रहती है। एक सच्चा कलाकार वीणा के तार को भांति सदैव वह ध्वनि प्रस्तुत करने को उद्धत रहता है जिसे भाव से उस छडा जाता है। इसी प्रकार कलाकार अवनीन्द्रनाथ टैगोर कि कला अनक राग रंग और रुप के साथ प्रस्तति हुई। उनक चित्रों का समह उसी भांति है जस एक सदर उद्यान में अनक प्रकार में पष्प अपना विभिन्न और रोचक स्वरुप लेकर उद्यान की शोभा बढ़ात है। यही कारण है कि जितनी रोचक विविधता अवनीन्द्रनाथ टैगोर के चित्रों में मिलती है किसी भी अन्य कलाकार में अन्यथा नही है।

अवनीन्द्रनाथ टैगोर के चित्रों का विषय उन्होंने सस्कत के काव्यो सस्कत के काव्यो इतिहास पराण कथाओ से भी उन्होंने प्ररणा ग्रहण की। सस्कत काव्यो की भाति उन्होंने बंगालो काव्यो से भी प्ररणा प्राप्त की। कला के अतिरिक्त भी भारत माता (1902) व जन गण मन पर भी आधारित चित्र बनाय जिन्ह तत्कालिक सामाजिक व राजनोतिक महत्व के भाव से जोड़ा जा सकता है। अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनो प्रारम्भिक यरोपियन कला शिक्षा के प्रभाव के अन्तर्गत अनकानक व्यक्तिचित्रों की रचना की। अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने भारतीय चित्र शैलियों का गहन अध्धयन करने के उपरात इन चित्रों में प्रदर्शित दृश्य जगत का बड़ी गहराई से अध्ययन किया और उन्होंने यहा अनभव किया कि दृश्य एवं चित्रण के अनन्य आयाम अवनीन्द्रनाथ टैगोर के चित्रों में विषय पशु पक्षी और फल फल भी रह है। अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने 9 वर्ष की आय में अपने पिता की लाल और नील एवं अन्य रंगोन पसिल के साथ कॉटज और खज़र के पड़ो के साथ ग्रामीण दृश्यों के दिलचस्प तस्वीरो में काफी कुशलता हासिल कर ली थी।

अवनीन्द्रनाथ टैगोर की कलात्मक दृष्टिकोण के कारण भारत में एक नई जाग्रति पदा की और सदिया की अवनति को उन्नति की और अग्रसर किया। उन्होंने प्राचीन भारतीय सस्कति की खोज कर पनर्रुद्धार किया और चित्रकला, मृतिकला, वास्तकला, पस्तक चित्रण डिजाइन वाणिज्य कला लिथोग्राफी उत्कीणन में कलात्मक गतिविधि के लगभग सभी शाखाओ में अपनो छाप से प्रभावित किया और नवीन जाग्रति का आह्वन किया।

वह प्रारम्भ में भारतीय और विदेशी चित्रों के अलंकारिक रूपांकरों के प्रति आकष्ट रह। इन दोनो शैलियो के अलंकारिक रुपाकरो को उन्होंने परस्पर समन्वित करक अपनाया। अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने आग चलकर हवल की सहायता से मुगल शैली के चित्रों का गभीरता से अध्ययन किया और मुगल शैली के चित्रों की अदभत कलाकारिता व कोमलता और अलकरण कौशल से अत्यन्त प्रभावित हुए और उन्होंने इन विशिष्ट को अपने चित्रों में सम्मान दिया।

अवनीन्द्रनाथ टैगोर जो भारत के अग्रणी कलाकार थ। कई क्रांतिकारी परिवर्तन किय। दस वर्षों के भीतर चित्रों का एक नया स्कूल उनक प्रयासो के साथ स्थापित किया गया था। यह भारतीय परम्पराओ पर परी तरह से आधारित था, उन्होंने मुगल व राजपताना चित्रों के साथ–साथ स्कूल के दीवारों पर यरोपियन चित्रों को बदल दिए तथा वहा एक विभाग शुरु कर दिया और पर भारत के कलाकारो को आमत्रित किया जिसक परिणामस्वरुप चित्रकला का

पनत्तन सम्भव हुआ और भारतीय चित्रकला क विकास में स्वर्णिम अवसर प्राप्त किय। जिसे बंगाल स्कूल के नाम से जाना जाने लगा।

''अवनीन्द्रनाथ टैगोर की तकनीक यथाथवादी प्रकार की है लकिन उनकी ये यथार्थवादी प्रकार की शैली ने तो ब्रिटिश अकादमीवादी ढग की है और न जापानो न मुगलई अपित उनकी यहा शैली नितात उनकी है'' विनोद विहारी

अवनीन्द्रनाथ टैगोर के रखाचित्रों काम में जापानी कला विद्वान ओकाकरा काकजो और जापानी चित्रकार योकॉयमा ताइकन के साथ उनक सबधो का असर पड़ा व उनका रखाचित्रों की और रुझान बढ़ता चला गया एवं इनक रखा चित्रों में जापानी प्रभाव की छाप भी स्पष्ट दखी जा सकती है। अवनीन्द्रनाथ इडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएटल आट के संस्थापक और मख्य कलाकार थ। 1908 में इडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आटस की पहली प्रदर्शनी में दर्शको के समक्ष उनक रखा चित्र आय व उनकी प्रशंसा प्राप्त की।
अवनीन्द्रनाथ टैगोर कला को किसी एक निश्चित माग से नही चलना चाहत थे न ही वह किसी तकनीक या प्रभाव के गलाम थे। अतः उनकी कला में स्वतन्त्रता का गण जो लोप सा हो चका था वह गण पनः उत्पन्न किया और भारतीय कला की नवोन उपलब्धियों का रुप प्रदान किया। अवनीन्द्रनाथ बाब नवीन कला परिवतियो के कला के आधनिक तकनीक आयाम प्रदान करने की कोशिश की।

उन्होंने भारतीय चित्रकला के पुनजागरण आदोलन का नतत्व किया जल्द से जल्द भारतीय कला के पनरुद्धार के लिय उनका योगदान विशेष रूप से मुगल और राजपत कला शैलियों के लिये था। वह कलाकार तो बंगाल स्कूल के थे परन्त भारतीय कला में स्वदेशी मूल्यों के पहल मख्य समथक थे। अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने चित्रकला, मृर्तिकला वास्तकला, पस्तक चित्रण वाणिज्य कला, लिथोग्राफी उत्कीणन में कलात्मक गतिविधि के लगभग सभी शाखाओ में अपनो पनः से परिचित किया और नवीन जाग्रति का आह्वान किया जो भारतीय कला का जाग्रति प्रदान की।

अवनीन्द्रनाथ टैगोर एक "शिक्षक"

1905 से 1916 ई. तक अवनीन्द्रनाथ ठाकुर कलकत्ता में 'गवर्नमेंट स्कूल ऑफ आट' के उपप्राचाय और कछ समय के लिये प्राचाय भी रह। उन्होंने भारतीय चित्रकला के एक नय स्कूल का जन्म दिया। अवनीन्द्रनाथ टैगोर के शिष्यों में प्रमख थे–नदलाल बोस, कालिपद घोषाल, क्षितिन्द्रनाथ मजमदार, सरन्द्रनाथ गागली, असित कमार हलधर, शारदा उकील, समरन्द्रनाथ गप्ता, मनोषी डे, मकल डे, के. वेंकटप्पा और रानाडा वकील। अवनीन्द्रनाथ ठाकुर के सर्वाधिक प्रख्यात शिष्य नन्दलाल बोस थ। 1919 ई० में इन्होन शोध पत्रिका निकाली।8

अवनीन्द्रनाथ टैगोर एक "साहित्यकार"

अवनीन्द्रनाथ टैगोर एक चित्रकार के अलावा एक प्रसिद्ध साहित्यकार भी थ। उन्होंने बगला भाषा में बाल–साहित्य का सजन किया। क्षिरर पतल, बरो अगला, राज कहानी और शकुन्तला उनकी कछ प्रमख कहानियो में से है। उनकी दसरी महत्वपण रचनाए थी–अपन्कथा, धरोया, पथ विपथ, जोरासकोर धर, भतापत्री, नलका और नहष। उन्होंने कला दर्शन और सिद्धात पर कई लख लिख जिसस उन्ह कलाकारो और विद्वानो से प्रशंसा मिली।9

पुरस्कार व सम्मान

- 2012 में इनॉगरल मडल ऑफ आट यु० एस० डिपाटमट ऑफ स्टट वाशिंगटन डी०सी0
- 2005 तमगा–ऐ–इम्तियाज, जर्नल मडल ऑफ ऑनर, गवर्नमट ऑफ पाकिस्तान10

प्रदर्शनिया

एकल प्रदशनिया

- 1996 आट ऑफ अबनिद्रनाथ टैगोर, नदन गलरी, शांति निकतन

समह प्रदशनिया

- 1928 : एथना, जिनवा, स्विटजरलड
- 1924 : टवलिंग एग्जीबीशन यएसए, आगनाइज्ड बॉय इडियन फडरशन ऑफ आटस एड इडियन सोसाइटी ऑफ ओरएिण्टल आटस।
- 1915–16: इडियन सोसाइटी ऑफ ओरएिटल आटस, कलकत्ता एड यंग मनस इडियन एसोशियसन, चन्नई

- 1914 : 22 एग्जीबेशन ऑफ सोसाइटी डस पटस ओरिएटल फ्रकोइस, ग्रड पालिस, परिस, टवल टू बल्जियम ,हॉलड, इपीरियल इस्टीटयूट, इग्लड।
- 1911 : इडियन सोसाइटी फॉर ओरएिटल आटस फॉर जॉज वी0 एस0 कोरोनशन, क्रिस्टल पलस, इग्लड के द्वारा ''फस्टिवल ऑफ एम्पायर''
- 1911 : इडियन सोसाइटी फॉर ओरएिटल आटस, इलाहाबाद
- 1900 : अमरिकन फडरशन ऑफ आट, यु0एस0ये0
- 1900 : गवर्नमन्ट स्कूल ऑफ आट एड क्राफ्टस, एक्सहिबिशन11

चित्रकारी का माध्यम

अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने तल रंगो, टम्परा जलरंग आदि सभी माध्यमो से चित्रों की रचना की तथा क्रोमोन, चारकोल व रंगोन पसिल रखा चित्रों आदि बनाय। उन्होंने एचिग प्राविधि द्वारा भी कछ चित्र बनाय। अवनीन्द्रनाथ टैगोर की रंग योजना को इसी शैली के समस्त चित्रकारो में सर्वश्रष्ठ और अद्वित्य माना जाता है, वह निपण रंगविद थे। टम्परा माध्यम के उपरान्त जापानी चित्रकारो की प्रक्षालन विधि की शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने टम्परा तथा जलरंग और प्रक्षालन विधि के उपयोग से चित्रों की रचना की। अधिकाश चित्र इसी माध्यम से निर्मित है वाश शैली की परिपाटी का प्रचार उन्होंने सार भारतवर्ष में किया और अनक कलाकार तयार किय उनका अधिकतर समय कला के प्रचार–प्रसार व अध्ययन म बीता। वह कला की एक परिपाटी चलाना चाहत थे जिसम वह सफल हुए। उन्होंने कला को कभी किसी दायर में बढ़ान का प्रयास नही किया। अबनिद्रनाथ टैगोर ने शुरुआती दिनो में तलिय, पन्सिल, स्याही व पस्टल रंगो का उपयोग किया तथा बाद में उन्होंने जापानी ब्रश स्टोक तकनीक से जल रंगो के साथ काम किया। जापानी चित्रकारो के प्रभाव से इन्होन ''वाश'' विधि को जन्म दिया।12

समग्र कलाकति विवरण–

- गणश जननी – (1908) ''गणश जननी'' में आपने भगवान गणेश की एक बचपन की छवि दर्शायी। भगवान को पड़ की एक शाखा पर लटककर खलत हुए दिखाई दे रह है जबकि उसकी मा उसक चहर पर एक चितित लगती है।
- भारत माता – यह सदर चित्र आपन 1905 में परा हुआ था। जिसम को भारत माता (मदर इडिया) को बहुत सदर दर्शाया गया है। चित्र में भारत माता के चारो हाथो में कछ लिये हुए दर्शाया हुआ है। चित्रकला भारतीय परम्परा को दर्शाती है।
- बद्ध की विजय – 'बद्ध की विजय' ज्ञान प्राप्त करने के बाद बद्ध के एक चित्र को दर्शाती है। यह मनष्यों के दखो से सबंधित बुद्ध के अतिम प्रश्न का भी उत्तर दता है।
- शाहजहाँ की मत्य'– यह मुगल सम्राट शाहजहाँ के अतिम दिन से सीध एक दृश्य है। तस्वीर में शाहजहाँ को उनक मौत के बिस्तर में दिखाया गया है, ताजमहल का अतिम दृश्य पान की कोशिश कर रहा है, जो उनका अतिम विश्राम स्थान होगा।
- यात्रा का अत – वर्ष 1993 में चित्रित, 'जनीज एड' में एक थक हुए दिखन वाले ऊट को अपनो यात्रा के अत में राहत से खुश दर्शाया गया है।
- चतन्य पुरी के समद्र तट पर अपने अनयायियो के साथ – जसा कि नाम से पता चलता है, यह चित्र चतन्न और उसक अनयायियो के बार में है।
- राधिका गजिग एट दा पोटट ऑफ श्रीकृष्णा (1913) – यह भगवान कष्ण के जीवन के आधार पर उनकी कई चित्रों में से एक है। ये चित्र उनक करियर के प्रारभिक चरणो के दौरान बनाए गए थ। अबान ने राजपत और मुगल शैली के चित्रों के साथ प्रयोग किया और राधा और कष्ण के जीवन पर कई काम किए। उन्होंने 1895 और 1905 के बीच कष्णा लीला के विभिन्न एपोसोड पर भी काम किया।
- सिद्धाथ से प्रस्थान – यह चित्र बद्ध के प्रस्थान के पीछ की कहानी बताता है, जब वह अपनो पत्नी और बट को अधिक अच्छ के लिये छोड़न का फसला करता है।
- औरंगजब एक्सामिनिग दा हड ऑफ दारा शिकोह – वर्ष 1911 में चित्रित, यह सजन औरंगजब की क्रूरता दर्शाती है। चित्रकला में, सम्राट औरंगजब ने अपने भाई दारा के कटे हुए सिर की जाच की।
- उमर खय्याम के चित्र – 1909 में चित्रित, यह सदर चित्र उमर खय्याम के चित्रों को दर्शाता है।
- समर, फ्रॉम ऋत श्रंगार ऑफ कालिदास (1905) यह चित्र पौराणिक भारतीय कवि कालिदास के बार में है।
- पक्षी और पशु श्रखला – जसा कि नाम से पता चलता है, यह चित्रों की एक श्रखला है जो पक्षियो और जानवरो को दर्शाती है। इसो वर्ष 1915 में चित्रित किया गया था।

- बासरी का आह्वान – वर्ष 1910 में चित्रित, 'द कॉल ऑफ द बासरी' भगवान कष्ण के जीवन से कई रोचक कहानियो में से एक को बताता है।
- सन 1930 में बनाई गई 'अरबियन नाइटस' श्रखला उनकी सबसे महत्वपण उपलब्धि थी।

उनकी अन्य प्रमख कलाकति निम्न प्रकार है :–

- अशोका की रानी (1910)
- भारत माता (1905)
- फरीलण्ड इलस्टशन (1913)
- अविसारिका (1892)
- बाबा गणश (1937)
- प्रवासी यक्ष (1904)
- ये एण्ड ये (1915)
- बद्ध और सजाता (1901)
- एन्ड ऑफ डालियन्स (1939)
- इलस्टशन ऑफ ओमर खय्याम (1909)
- कच और दवयानी (1908)
- कष्णा लीला सीरीज (1901 से 1903)
- मनलाइट म्यूजिक पाटी (1906)
- मन राइज एट मसरी हिल्स (1916)
- पोएट का बॉल–डास इन फाल्गणी (1996)
- पष्प–राधा (1992)
- शाहजहाँ डोमिग ऑफ ताज (1909)
- श्री राधा बॉय दा रिवर जमना (1913)
- टम्पल डासर (1992)
- दा फीस्ट ऑफ लम्प्स (1907)
- दा लास्ट जनी (1914)
- वीणा प्लयर (1911)
- बोधिसत्व तसक्ष (1914)
- बद्धा अस मडिटट (1914)
- माय मदर (1992)
- आखी पाखी
- चश्मा शाही
- जमना
- निशात
- शिवा समर्तिनी
- वीमेन इन प्रोफाइल
- फाट एड प्लअसर
- नाईट एट शालीमार बाघ
- नसीम बाघ
- अशोका
- बन्दर व बकरी13

निष्कर्ष

अवनीन्द्रनाथ टैगोर चित्रकला में एक नई राष्ट्रीय शब्दावली के निर्माता के रुप में स्थापित किया है और वह भारत में कला की उन्नति और सौदय दृश्य को पनजीवित करने में मदद की। अवनीन्द्रनाथ टैगोर सकड़ो बरसो क उपरान्त

भी अपनो शक्तिशाली रचनात्मक शैली की कारण आज भी हमार बीच होन का आभास होता है। वे भारतीय कला में स्वदेशी मूल्यों के पहल मख्य समथक थे। अतः अवनीन्द्रनाथ टैगोर को हम आधनिक चित्रकला का नायक कह तो अनचित नही होगा।

सन्दभ सची

1. झा, चिरजी लालः भारतीय चित्रकला का विकास पृ० 109 लक्ष्मी कला कटीर नया गज गाजियाबाद (1969)
2. के0 आर0 कपलानीः अबनीद्र नबर, दा विश्व भारती, 1942 मई, वाल्यूम 7, पृ. 7
3. एल० सी० शमा : ए ब्रीफ हिस्टो ऑफ इडियन पेटिंग, गोयल पब्लिकेशन हाऊस, मरठ 2002 प. 151
4. प्रदीप किरण : भारतीय आधनिक कला, आर्कति 3, 2007 कष्णा प्रकाशन मीडिया (प्रा०) लि० प. 31
5. एल० सी० शर्मा : ए बोफ हिस्टो ऑफ इडियन पेटिंग, गोयल पब्लिकेशन हाऊस, मरठ 2002 पृ. 151
6. अग्रवाल, आर0 ए0 : कला विलास इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस पृ0 194 मरठ (2003)
7. अग्रवाल, गिर्राज किशोर : आधनिक भारतीय चित्रकला पृ0 33 सजय पब्लिकेशन शैक्षिक पस्तक प्रकाशन अस्पताल माग आगरा –3
8. http%//www-itshindi-com/abanindranath&tagore-html
9. www-artsome-co/images/artistImages/Abanindranath%20Tagore-pdf
10. www-artsome-co/images/artistImages/Abanindranath%20Tagore-pdf
11. https%//www-culturalindia-net/indian&art/painters/abanindranath&tagore-html
12. https%//en-wikipedia-org/wiki/Abanindranath_Tagore
13. http%//www-itshindi-com/abanindranath&tagore-html